हिन्दी विभाग
स्नातक तृतीय (III)
पत्र संख्या – 08

भारत-दुर्दशा : प्रासंगिकता

19वीं शताब्दी के प्रारंभिक सामाजिक, धार्मिक आन्दोलनों को मुख्य रूप से नवजागरण सुधारवादी आन्दोलन के नाम से जाना जाता है। इन आन्दोलनों ने सामाजिक और धार्मिक कुप्रथाओं पर जमकर चोट किया, इन्होंने साम्यवादी व्यवस्था में फैली बुराईयाँ वो चाहे जाति-पाति की हो, छुआ-छूत की हो या फिर धार्मिक अंधविश्वासों की, सबकी जमकर आलोचना की गई। इन आन्दोलन के द्वारा सामाजिक, धार्मिक जो भी सुधार हुआ वह राष्ट्रीय आन्दोलन वृहद् रूप देने में काफी सहायक हुआ। भारतेन्दु जी ने धार्मिक संकीर्णता को स्वीकार नहीं किया, नहीं वे वेदों के माध्यम से भारत की प्रगति या विकास करना चाहते थे। उनका मानना था कि वेदों-उपनिषदों को शिक्षा का जरूरी भाग बना दिया जाए, अन्य विषयों की भाँति इनको भी पढ़ाया जाए क्योंकि तभी मनुष्य का चतुर्मुखी विकास होगा।

भारतेन्दु जी का मानना था कि व्यक्ति की मूल समस्या क्या है इसको देखने का कोई साहस नहीं जुटा पा रहे थे। भारतेन्दु जी की वैष्णवता और क्रांतिकारिता में एक अद्भुत अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट होता है इन सब के बावजूद भी इन्होंने बाह्य (बाह्य) आडम्बर का जमकर विरोध किया। उन्होंने ब्रिटिश राज्य व्यवस्था पर सीधे प्रहार नहीं किया किन्तु अपनी बातों को कहने में कहीं चूकते भी नहीं थे।

उन्होंने उस समय की स्थितियों से अपने आपको जोड़ने का काम किया, वे अपने अनुभव के आधार पर तथ्यों की अभिव्यक्ति करते हैं। उन्होंने महारानी विक्टोरिया को यह बात लिखना कभी नहीं भूलते- कि तुम सिंह हो, क्योंकि मनुष्य और सिंह दोनों पन तुममें हैं, टैक्स तुम्हारा क्रोध है, चुंगी और पुलिस तुम्हारी दोनों भुजाएं हैं। वे बताने का प्रयास है कि आज तक ठीक है किन्तु आपकी अन्य व्यवस्थाएँ क्रूर एवं दमनकारी हैं, जहां मानव का सम्पूर्ण अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है भारतेन्दु जी अपने इस अनुभव की अभिव्यक्ति कई प्रकार से करते हैं। किसी भी रचना का मूल्यांकन उसके साहित्य प्रासंगिकता के विषय में ही किया जाता है क्योंकि रचनाकार का उद्देश्य तात्कालीन व्यवस्थाओं से तो जुड़ा ही रहता है किन्तु भविष्य की आधारशिला भी वह उस रचना में रखने का प्रयास करता है।

प्रासंगिकता का सवाल कोई नया नहीं है। किसी भी रचना की प्रासंगिकता को सिद्ध करना ही पड़ता है अगर वह रचना देश, काल, वातावरण के अनुरूप नहीं है उस रचना में किसी विशेष परिस्थिति को समझने की क्षमता नहीं है अथवा उसके निदान की ताकत नहीं है तो रचना की प्रासंगिकता पर सन्देह पैदा किया जाने लगता है

प्रासंगिकता इस बात पर भी निर्धारित होती है कि क्या वह रचना हमारे वर्तमान जीवन की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है या क्या वह रचना भौगोलिक परिस्थितियों से पूर्ण रूप से सम्बन्ध है जहाँ तक रचनाकार का प्रश्न है वह वर्तमान परंपरा और परिवेश से आगे निकलकर अपने अनुभव के आधार पर उस सत्य को अपनी रचना में प्रतिष्ठित करने का प्रयास करता है। इस तरह में उसका सम्बन्ध वर्तमान प्रतिक्रियाओं से न होकर मानव मात्र के अवचेतन की मूलभूत संरचना से होता है। इन्हीं स्थितियों में वह प्रत्येक समय का मानव अपनी पहचान तलाशता है। यदि रचना पर दृष्टि डाली जाए तो यह बात साफ उभरकर सामने आती है कि भारतेन्दु जी की रचना की प्रासंगिकता जितनी कल थी, उतनी आज भी है यह भारतेन्दु जी के कालजयी प्रतिभा का परिणाम था। यदि कल के भारत-दुर्दशा से देखा जाय तो एक बात और भी स्पष्ट हो जाती है कि यह कल का सत्य नहीं बल्कि वर्तमान समय का सत्य है।

भारतेन्दु जी की सबसे बड़ी चिन्ता यह थी भारत की स्वतंत्रता का सूर्य कैसे उगे। यदि भारत-दुर्दशा में चित्रित, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक वातावरण का विश्लेषण किया जाए तो स्पष्ट होगा की सिर्फ नाम का ही परिवर्तन है

बाकी सब कुछ वैसा ही तो स्पष्ट हो रहा है। आलस्य का शब्द वर्तमान समाज में आज भी उसी प्रकार चित्कार कर रहा है यह नाटक आज भी अपनी प्रासंगिकता का उद्घोष कर रहा है जो भी भारतेन्दु के काल्पनिक पात्र थे, भारत-दुर्दैव, मदिरा, सत्यानाश, अंधकार, रोग सभी आज के भारत की वास्तविकता बन गये हैं आज भी सफेद पोश उसी प्रकार भ्रष्ट है, आज भी [redacted] पुलिस की वही व्यवस्था है, आज भी धर्म का अन्धानुकरण किया जा रहा है। आज के भारत-दुर्दशा पर ही भारतेन्दु जी का मन आहत होगा, भारत वर्ष की अवस्था को देखकर भारतेन्दु जी छटपटा उठे थे। भारत की स्वाधिनता में भारतेन्दु जी ने अपने इस नाटक के माध्यम से सहयोग कर भारत को स्वाधीन कराया मगर आज भी स्थितियों से कौन कराये कोई रास्ता नजर नहीं आता।

भारतेन्दु जी के इस नाटक में सामाजिक, राजनीतिक पतन से कितने क्षुब्ध रहे होंगे। आधुनिक युग में राष्ट्रीय भावना एवं वास्तविक दृष्टिकोण देने वाले शायद यही युग पुरुष थे जिन्होंने अपने नाटकों में भारत की वर्तमान चरमराती सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक गतिविधियों को साकार रूप देने का काम किया।

दिनांक
18/09/2020

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)